शब्द सीमा का ध्यान दें

Rupali chaubey

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

Que 1 (A) रूसो (Rousseau)

फ्रांसीसी क्रांति के समय के महान दार्शनिक थे

कृतत्व - (सोशल कॉन्ट्रैक्ट)

इन्होंने फ्रांस की तत्कालीन सामन्ती व्यवस्था की बुराईयों को उजागर किया तथा लोगों की 'सामान्य इच्छा' पर आधारित राज्य निर्माण की बात कही।

(B) पेरिस शांति सम्मेलन

आयोजन - पेरिस में 1919 में

उद्देश्य - प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात विश्व में शांति व सुरक्षा के लिए सम्मेलन आयोजित।

परिणामस्वरूप - मित्र राष्ट्रों ने पराजित राष्ट्रों के साथ संधियां कीं जर्मनी के साथ वर्साय की संधि।

(C) आरण्यक

यह ब्राह्मण ग्रन्थों का अंतिम भाग है। इसके अंतर्गत दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन किया जाता है। चिन्तनशील लोगों को अधिक महत्व [illegible] आरण्यक की संख्या 7 है - ऐतरेय, शांखायन आदि।

(Mains Answer Sheet)

(क) नसीरुद्दीन - ए - निज़ामगामी

यह दिल्ली सल्तनत के गुलाम वंश से संबंधित स्थापत्य — इल्तुतमिश।

उद्देश्य - नासिरुद्दीन गुलाम का पराजित ... सेनापति के सम्मान में करने के लिए उच्च पदों पर आसीन किया।

प्रमाण - [illegible]

(ङ) देवबंद आंदोलन

- एक मुस्लिम धार्मिक आंदोलन।
- आंदो. की शुरुआत 1867 में मोहम्मद कासिम नानौतवी द्वारा की गई थी।

उद्देश्य - कुरान व हदीस की शिक्षाओं का मुसलमानों के मध्य प्रचार-प्रसार करना।

(F) शहडोल संभाग के अंतर्गत आने वाले जिले

- शहडोल
- उमरिया
- अनूपपुर

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का सटीक ध्वज..

(9) सुभद्रा कुमारी चौहान

यह एक कवियत्री व लेखिका है
संबंध म.प्र. के खण्डवा से है।
जेलभोग गई। व अपने वन्दीगृह मे
इन्होंने ही अधिक कविता लिखाई।
रचनाएं काव्य संग्रह - मुकुल, त्रिधारा।
कहानियाँ - बिखरे मोती आदि।

(10) म.प्र. पर्यटन विकास निगम
स्थापना - 1978
उद्देश्य - म.प्र. के पर्यटन क्षेत्रों का
विकास करना एवं पर्यटन
गतिविधियों को प्रोत्साहित करना।

टेनिस कोर्ट की शपथ
(11)
1789 फ्रांस की क्रांति के समय घटी घटना।
इसके अंतर्गत स्टेट III (आमजन, व्यापारी, धार्मिक आदि समिलित) ने टेनिस कोर्ट नामक स्थान पर
शपथ ली की "हम कभी अलग नहीं होंगे जब तक
संविधान नहीं बन जाता तब तक साथ रहेंगे"।

Scanned with CamScanner

(7) तालिकोटा का युद्ध

कब हुआ - 23 जनवरी 1565

कहाँ - तालिकोटा (कर्नाटक)

किसके बीच - विजयनगर व दक्षिण राज्यों के संघ के बीच

नेतृत्वकर्ता - रामराय (विजयनगर) व अली आदिल शाह (दक्षिण राज्यों के संघ)

परिणाम - विजयनगर की हार

(8) रहनुमाई मजदायस्न सभा

स्थापना कब - 1851

संस्थापक - दादा भाई नौरोजी

उद्देश्य - पारसी समाज का पुनरुद्धार करना।

(9) विज्डिट

(Mains Answer Sheet) कौटिल्य एकेडमी

(m) सिंहदेव समिति

- म.प्र. जिला पुनर्गठन से संबंधित समिति।
- जून 1998
- 4 नये जिलों के निर्माण की सिफारिश।

जिसमें से उमरिया, हरदा, नीमच म.प्र. के गठित होते हैं।

(n) कवी गंग प्रश्न

(o) चरण पादुका नरसंहार

- 14 जनवरी 1931
- छतरपुर जिले में घटित हुआ था।
- अनेक स्वतंत्रता सेनानियों की शांतिपूर्ण बैठक पर पुलिस द्वारा अंधाधुंध गोली चलाई जिससे कई लोगों की मृत्यु।
- जलियावाला बाग की संज्ञा दी गई।

(c) (a) द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभावित परिणाम लिखिये?

1939-1945 के बीच जर्मनी द्वारा पोलेण्ड पर आक्रमण से द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत हुई जिसने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों को देखे तो वह निम्न दिखाई देते हैं-

परिणाम

1) यूरोप का पतन => द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राजनीतिक व आर्थिक रूप से यूरोप का महत्व कम व अमेरिका नई शक्ति बनकर उभरा।

2) दो महाशक्तियों का उदय => वैश्विक परिपेक्ष्य में अमेरिका व रूस का महाशक्तियों के रूप में उदय हुआ।

3) शीतयुद्ध का आरंभ => अमेरिका (पूंजीपति) व सोवियत संघ (साम्यवादी) के बीच आरंभ।

4) संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय => सैनफ्रांसिस्को में विश्व में शांति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना।

5) उपनिवेशवाद का पतन

6) गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उदय आदि।

इस तरह द्वितीय विश्व युद्ध ने संपूर्ण विश्व की दशा व दिशा बदल दी इस युद्ध के बाद शांति व सुरक्षा व निःशस्त्रीकरण बल दिया गया ताकि मानवता की रक्षा की जा सके।

3½

सीमा मार्ग
प्रारूप
लक्ष्य

(प्र.) (ख) पुनर्जागरण इटली से होने के कारण बताइये ?

उत्तर:

14वीं सदी के बीच इटली से पुनर्जागरण की शुरुआत मानी जाती है जिसका अर्थ है पुरातन व्यवस्था में परिवर्तन के साथ फिर से स्थापित करना जहाँ तार्किकता व वैज्ञानिकता युक्त मानवता का महत्त्व हो।

पुनर्जागरण का इटली से होने के पीछे निम्न तर्क माने जाते हैं –

भौगोलिक स्थिति => भूमध्यसागर के मध्य स्थित होने के कारण भौतिक सम्पन्नता व सांस्कृतिक उन्नति हुई

नगरों की स्थापना => व्यापारिक गतिविधियों से फ्लोरेन्स, मिलान, वेनिस आदि नगरों का निर्माण यहाँ संग्रहालयों, पुस्तकालयों आदि की स्थापना

मध्यम वर्ग का उदय => व्यापारिक मध्यम वर्ग के उदय ने साहित्यकारों, कलाकारों जैसे पेट्रार्क, दांते आदि का उदय जो पुनर्जागरण के प्रचारक बने

राजनीतिक व्यवस्था => सामंती व्यवस्था के स्थान पर उदारवादी व स्वतंत्र विचारधारा।

कुस्तुन्तुनिया का पतन => तुर्की के आक्रमण से यहाँ के विद्वानों, कलाकारों, शिल्पी के इटली में संपर्क।

उपरोक्त कारकों से इटली में पुनर्जागरण को गति प्रदान कि जो आगे चलकर यूरोप व पूरे विश्व में अपना प्रभाव स्थापित हुआ।

KAUTILYA ACADEMY

प्रश्न संख्या (Mains Answer Sheet)

गुप्तकाल में हुए सामाजिक परिवर्तनों का उल्लेख करो।

तीसरी सदी में मौर्योत्तर काल गुप्त राजवंश की नींव रखी गई। इसकी जानकारी के स्रोत में साहित्यिक स्रोत ह्वेनसांग, पुरातात्विक स्रोत एरण, हरिषेण प्रयाग प्रशस्ति लेख आदि हैं।

गुप्तकाल में हुए सामाजिक परिवर्तनों को निम्न रूप से देख सकते हैं –

सामाजिक परिवर्तन
- गुप्त वर्णव्यवस्था
- स्त्रियों की स्थिति
- दासों की स्थिति
- अस्पृश्यता

वर्णव्यवस्था => समाज चार वर्णों में विभाजित
=> जन्म के आधार पर वर्ण निर्धारित
=> ब्राह्मणों का स्थान उच्च
=> स्थानान्तरण ब्राह्मण कृषि कार्य करने लगे
=> अवसरानुकूल स्मृति शूद्रों को व्यापारी, कारीगर, कृषक होने की अनुमति।

स्त्रियों की स्थिति => दयनीय थी।
– एरण अभिलेख में सती प्रथा के साक्ष्य।
– स्त्रियों को सम्पत्ति से वंचित

– अधिकार दिये गये

– नारद स्मृति विधवा विवाह का समर्थन मिलता है।

दासों की स्थिति ⇒ नारद स्मृति में 15 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है।

– दासों की मुक्ति की बात क्या की गई।

अस्पृश्यता ⇒ फाह्यान ने अस्पृश्यता का उल्लेख किया है जो गाँवों से अलग वर्ग था उन्हें अन्त्यज व चाण्डाल कहा जाता था।

इस तरह हम गुप्तकाल में यद्यपि उच्च भौतिक प्रगति के कारणों से उक्त परिवर्तन देखते हैं किंतु कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं दिखाई देते हैं आम जन की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं।

4½

प्रश्न संख्या

शाहजहाँ कालीन स्थापत्य का वर्णन कीजिये?

मुगल कालीन शासक जहाँगीर के पश्चात् 17वीं सदी में सिंहासन पर बैठा जिसके काल को स्थापत्य का स्वर्णकाल कहा जाता था।

शाहजहाँ कालीन स्थापत्य कला को इस प्रकार वर्णित कर सकते हैं—

शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला →

- विशेषता – किलों, महलों, मस्जिदों आदि का निर्माण
  - लाल किला
  - मुमताजमहल
  - जामा मस्जिद आदि
- सामग्री ⇒ लाल बलुआ पत्थर व संगमरमर का प्रयोग किया।
- विशेषता ⇒ भव्यता, विशालता व अलंकृत मेहराबों का निर्माण किया।
  - पित्राडुरा पद्धति का उपयोग
  - तहखानों, गुम्बदों व चारबाग पद्धति का प्रयोग किया।

Scanned with CamScanner

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है
[illegible] की स्थापना में रुचि थी जिसके आधार
पर बड़े पैमाने निर्माणकार्य परकोटे की जलनिकास में भी
जटिलता लिये हुये है।

33

KAUTILYA ACADEMY

बंग-भंग विरोधी आंदोलन पर टिप्पणी लिखिए?

1905 में लार्ड कर्ज़न द्वारा बंगाल विभाजन के लागू करने के साथ ही राष्ट्रवादियों द्वारा बंग-भंग आंदोलन की शुरुआत की गयी। बंग-भंग आंदोलन को इस प्रकार देख सकते हैं-

बंग-भंग आंदोलन

कारण | भारतीयों की प्रतिक्रिया | विस्तार | कार्यप्रणाली | कांग्रेस की भूमिका | प्रभाव

कारण ⇒ कर्ज़न का मत प्रशासन का संचालन सुचारु संचालन के लिए बंगाल का विभाजन।
⇒ भारतीयों आधार धर्म के आधार पर विभाजन बढ़ती राष्ट्रीयता को कुचलना।

भारतीयों की प्रतिक्रिया ⇒ स्वदेशी व बहिष्कार आंदोलन।

कार्यप्रणाली ⇒ विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
- जनसभाएं व प्रदर्शन
- स्वदेशी व राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार
- बंगलक्ष्मी व बंगल आदि स्थापना पट जल आदि।

विस्तार — पंजाब (लालालाजपतराय), महाराष्ट्र (बालगंगाधर तिलक), दिल्ली (सैय्यद हैदर रजा)

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

पृष्ठभूमि => बंगाल विभाजन की आलोचना।

- स्वदेशी व बहिष्कार आंदो. का जन्म

प्रभाव => स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग में वृद्धि।

- भारतीय कला संस्कृति में वृद्धि, आमार सोनार बंगला'

- राष्ट्रीय चेतना का प्रसार आदि।

इस तरह बंग-भंग आंदो० माध्यम भारतीयों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया कि जो राष्ट्रीय आंदो० की दिशा में गति प्रदान करता है।

5

(Mains Answer Sheet)

06 (i)

मध्य प्रदेश में झण्डा सत्याग्रह पर जानकारी प्रस्तुत करें।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम से म.प्र. भी अछूता नहीं रहा प्रदेश ने भी जन संघर्ष में आगे बढ़कर हिस्सा लिया।

म.प्र. स्वतंत्रता संग्राम में झण्डा सत्याग्रह का विशेष उल्लेख है जिसे निम्न बिंदुओं के आधार पर समझते हैं -

झण्डा सत्याग्रह

- वर्ष
- कहाँ
- कारण
- प्रशासन की प्रतिक्रिया

वर्ष - 1923 में जबलपुर से झण्डा
कहाँ   सत्याग्रह की शुरुआत हुई

कारण => असहयोग आंदोलन की तैयारी के सिलसिले में पहुंचे कांग्रेसियों का स्वागत करने के लिए जबलपुर नगरपालिका भवन पर तिरंगा फहराया गया।

=> पुलिस कमिश्नर द्वारा उतारकर तिरंगे को कुचला।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

→ अन्य सत्याग्रह के विरोध में राजकुमारी
मोहनराव, नारायणसिंह, मुकुन्द लाल
आदि ने भी भूमिका निभाई।

• वैकोम ने अन्य महत्वपूर्ण सफल
आगे सत्याग्रह की शुरुआत की

नेतृत्व → देवदास गांधी, राजगोपालाचारी,
आदिक प्रचार हस्य।

परिणाम → कुन्दनलाल को 8 माह जेल।

इस तरह वैकोम में अन्य सत्याग्रह के महत्व को समझा जाता है जिसने भारत में एक सत्याग्रह की शुरुआत कर दी।

6 (a) चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रमुख उपलब्धियों की जानकारी दीजिए।

चंद्रगुप्त मौर्य, धनानंद को पराजित कर 322 ई.पू. में मगध के सिंहासन पर बैठा व मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

चंद्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियों को जानने के स्रोत जैसे मेगस्थनीज की इंडिका, पुराण आदि से निम्न जानकारी प्राप्त होती है -

चंद्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियां

1) सैन्य सफलता => नंद वंश का अंत किया
- सेल्युकस निकेटर को हराया
- पश्चिमोत्तर भारत स्थित यूनानी शासकों से मुक्त

2) साम्राज्य विस्तार => काबुल, कश्मीर, बंगाल, मैसूर

3) शासन प्रबंध => केंद्रीय, प्रांतीय, स्थानीय शासन प्रशासन-तंत्र आधारित था।

4) निर्माणकार्य => सुदर्शन झील का निर्माण
- राजप्रासाद का निर्माण आदि

5) धर्म - सहिष्णु शासक
- भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा

इस तरह चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की नींव रखी व एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कि जो आगे अशोक द्वारा विस्तारित किया गया।

4

KAUTILYA ACADEMY

Scanned with CamScanner

Q.2 (ब) असहयोग आंदो० का महत्व लिखो?

भारत में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदो० की शुरुआत की गई जिसने ब्रिटिश सरकार की जड़े कमजोर की।

असहयोग आंदो० के महत्व को देखे तो निम्न महत्व नजर आते है—

- देश में राजनैतिक जागरूकता का प्रचार प्रसार किया।
- सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया।
- इस आंदो० से देश के लोगो में राष्ट्रभक्ति की भावना का विकास हुआ।
- इस आंदो० ने अहिंसा के महत्व की ओर अधिक बढ़ाया।
- अंग्रेजो के दंभ को चोट पहुंची।
- स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम व स्वाभिमान की भावना का संचार हुआ।
- अधिक से अधिक लोगो को राष्ट्रीय आंदो० में भाग लेने को प्रेरित किया।

अतः यह आंदोलन तात्कालिक रूप से असफल दिखाई देता है किंतु इसने दीर्घकालिक के रूप में स्वतंत्रता के बीज बोये जिससे आगे चलकर भारत छोड़ो आंदो० को परिणाम तक पहुंचाया जा सका।

(Mains Answer Sheet)

Q. (2) म.प्र. में स्थित जैन पर्यटन स्थलों की जानकारी दें?

म.प्र. सांस्कृतिक विविधता लिये हुये प्रदेश है जहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन आदि धर्मावलंबियों के लोग व धार्मिक स्थल मौजूद हैं।

म.प्र. में जैन पर्यटन स्थलों को इस प्रकार से देखा सकते हैं —

पावागिरी → खरगोन जिले में स्थित
ऊन जैन मंदिर स्थित है

सिद्धवरकूट → देवास के
नेमावर में
स्थित जैन तीर्थस्थल है

मुक्तागिरी → बैतूल जिले में स्थित है यहाँ जैनों के 52 मंदिर है
– पहाड़ों को काटकर बनाये गये है।

सोनागिरी → दतिया जिले के सोनागिरी में प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है

बड़वानी → 72 फीट ऊँची बाहुबली की मूर्ति खरगोन में स्थापित है।

गोम्मटगिरी → इंदौर जिले में स्थित आदिनाथ, महावीर स्वामी, पार्श्वनाथ आदि के जैन मंदिर स्थापित है

Q 2 (7) म.प्र. की जनजातीय कला पर प्रकाश डालिए।

भारत में म.प्र. में सर्वाधिक जनजातीय संरचना व प्रकार के लोग रहते है जिनकी अपनी एक कला है जो जनजातीय समूह को कला विशेष पहचान प्रदान करती हैं।

म.प्र. की जनजातीय कला पर दृष्टि डाल तो उसमें विविधता नजर आती है –

जनजातीय कला

⇒ शिल्पकला ⇒ मिट्टी शिल्प (बस्तर)
⇒ गुड़िया शिल्प [illegible] बांस की [illegible] बाबूजा आदि
⇒ धातु शिल्प
⇒ बाघ प्रिंट
– प्रकाशित [illegible]

⇒ चित्रकला ⇒ निमाड़ – नागचित्र, [illegible] आदि
मालवा – मांडना, रंगोली आदि
बुंदेली – चौक पूरना आदि

⇒ नाट्यकला – मालवा के – माच
बुंदेलखंड – स्वांग
निमाड़ – गम्मत [illegible]

नृत्यकला – गौर, करमा, भगोरिया आदि

इस तरह म.प्र. में अनेक जनजातीय कलाएं प्रसिद्ध हैं जो जनजातीय संस्कृति को व्यक्त करती हैं आवश्यकता है उनके संरक्षण व विकास की ताकि उन्हें जीवित रखा जा सके।

3½

उदाहरणों की कमी

3(a) औद्योगिक क्रांति क्या है? इसके प्रभावों का वर्णन कीजिये?

18वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड से औद्योगिक क्रांति की शुरुआत मानी जाती है क्रांति का तात्पर्य किसी व्यवस्था में आमूलचूल त्वरित व व्यापक परिवर्तन होता है, औद्योगिक क्रांति में जहाँ हस्तशिल्प के स्थान पर बड़ी-बड़ी मशीनों व कारखानों में उत्पादन, लोहा व कोयले का उपयोग, ऊर्जा के क्षेत्र में कोयले, पेट्रोलियम आदि का उपयोग, ऊर्जा संचालित वाष्प चलित इंजन आदि के प्रयोग से किया जाता है जिससे जहाँ वस्तुओं के अत्यधिक उत्पादन संभव हो सका।

औद्योगिक क्रांति के परिणामों के बारे में विचार करें तो यह निम्न विवरण सामने आते है जैसे —

प्रभाव

- श्रमिकवर्ग पर प्रभाव
- सामाजिक क्षेत्र पर प्रभाव
- राजनैतिक प्रभाव
- वैश्विक प्रभाव

(Mains Answer Sheet)

① आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव => उत्पादन में वृद्धि => कारखानों व मशीनीकरण के कारण वस्तुओं के उत्पादन में कल्पनातीत वृद्धि हुई।

शहरीकरण => गांवों में कुटीर उद्योगों के विनाश से लोगों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन हुआ।

आर्थिक असंतुलन => औद्योगिक राष्ट्र द्वारा अविकसित राष्ट्रों के शोषण में वृद्धि से दोनों के बीच खाई को गहरा किया।

मुद्रा व बैंकिंग प्रणाली का विकास => बदलते आर्थिक परिवेश में बैंक के माध्यम से लेन-देन व कागजी मुद्रा का प्रचलन बढ़ा।

② सामाजिक प्रभाव => जनसंख्या में वृद्धि - कृषि में तकनीकी प्रयोग से खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि व यातायात के साधनों ने पहुंच को सुनिश्चित कर जनसंख्या में वृद्धि की।

नये सामाजिक वर्गों का उदय - औद्योगिकीकरण से पूँजीपति वर्ग, श्रमिक वर्ग, मध्यम वर्ग का उदय हुआ जिससे समाज में असंतुलन पैदा हुआ।

मानवीय संबंधों में गिरावट => मानवीय भावनात्मक संबंधों का स्थान

भौतिक संसाधनों के लिए, मानव को मशीन मान लिया गया

नैतिक मूल्यों का पतन => भौतिक प्रगति के नाम न मूल्यों की प्रगति को नकारा।

राजनीतिक प्रभाव => प्रजातांत्रिक प्रणाली के लोगों की मांग गि. क्रांति प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली की मांग को उदारता व स्वतंत्रता के, बल देती व पूँजीपति वर्ग को समर्थन करती थी।

श्रमिक विरोध => श्रमिकों ने अपने नेतृत्व व्यवस्थापि को सुधारने के लिये श्रमिक संगठनों की स्थापना व अपने अधिकारों की मांग के रूप में आंदोलन किये।

वैचारिक प्रभाव => मुक्त व्यापार की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हुआ। समाजवादी विचारधारा का विकास।

इस तरह औद्योगिक क्रांति ने संपूर्ण विश्व पर प्रभाव डाला व विश्व को नवीन दिशा प्रदान कि जिसमें औद्योगिकीकरण को प्रकृतता दी जाती है। वर्तमान में भी यह प्रक्रिया सतत रूप से क्रियाशील है किंतु इस औद्योगिक विकास के रूप में मानवीय हितों, पर्यावरणीय हितों को ध्यान में रखने की आवश्यकता, तभी सतत् व समावेशी विकास की अवधारणा को साकार किया जा सकता है।

Mains Answer Sheet

Q. 15 अकबर को राष्ट्रीय सम्राट कहा जाता है विश्लेषण कीजिये।

[illegible] की शताब्दी में हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात 1556 में मुगल साम्राज्य का शासक बना तथा जिसने भारत के बड़े भाग पर शासन किया तथा शासन का संचालन भी दूरदर्शिता कुशलता व कूटनीति के साथ किया जिससे वह लोगों के ह्रदय तक शासन करने में सफल व जनता के मन में शासकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

अकबर को राष्ट्रीय सम्राट कहने के पीछे निम्न आधारों को देखा जा सकता

राष्ट्रीय शासक मानने के आधार

- शासन का प्रेम व सहयोग पर आधारित
- एकता शांति की नीति
- राजनैतिक एकता
- धर्म निरपेक्ष व्यापक
- अन्य

अकबर का शासन => अपने जनकल्याणकारी
प्रेम व सहयोगपर कार्यों के माध्यम से
आधारित प्रजा का दिल जीत
लिया था

सुलहकुल की नीति => उसने शांति अभियान
शांति की नीति में शांति को स्थापित
करने के लिए समाज
के सभी वर्गों को एकजुट में बांधने का प्रयास किया।

राजनैतिक एकता => संपूर्ण राज्य में एक ही
स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था
(मनसबदारी)
=> योग्यता के आधार पर
नियुक्ति
- जजिया, धार्मिक कर व अन्य अनुचित करों की
समाप्ति

धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना => सभी वर्गों के
साथ समता का
व्यवहार
- हिन्दू के लिए तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति

अन्य कार्य => सामाजिक एकता के लिए
अन्तर्जातीय विवाह व अंत-
र्जातीय खान-पान को प्रोत्साहन

सांस्कृतिक व धार्मिक एकता स्थापित करने के लिए दीन-ए-इलाही धर्म, सुलहकुल की स्थापना)

हिन्दू धर्म के प्रति आदर व इसके रीति रिवाजों के प्रति आदर भाव रखता था।

उपरोक्त आधारों पर देखें तो अकबर प्रबोध शासक कहलाता है जिसने वह अपने कर्तव्यों का पालन प्रभावी रूप से जनहित में करता है जो वर्तमान की लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी देखे जा सकते हैं। अतः अकबर एक महान शासक था जिसने तत्कालीन सीमाओं में रहते हुए सबके हित में कार्य किए।

5

Q. 03. (D) ब्रिटिश कालीन भूराजस्व व्यवस्था का वर्णन कीजिये।

ब्रिटिश सरकार ने भारत में व्यापारी तक शासन किया जिसकी नीतियों का उद्देश्य शोषण करना व अधिक से अधिक लाभ कमाना था। ब्रिटिश सरकार की भूराजस्व नीतियाँ भी इसी उद्देश्य से प्रभावित रहीं जिसे भारत में बारंबार अकाल, बेरोजगारी, गरीबी जैसी समस्याओं के रूप में देखा जाता है।

ब्रिटिश कालीन भूराजस्व नीतियों को इस प्रकार देखा जा सकता है –

भूराजस्व नीतियाँ
- स्थायी बंदोबस्त
- रैयतवाड़ी व्यवस्था
- महलवाड़ी व्यवस्था

स्थायी बंदोबस्त => 1793 लार्ड कार्नवालिस द्वारा इसे लागू किया गया।

विशेषताएं => भूराजस्व जमींदारों के साथ स्थायी निर्धारण

=> बंगाल, बिहार, उड़ीसा में लागू की गई

(Original Answer Sheet)

जमींदारों को भूमि का स्थायी मालिक बना दिया।

– सरकार – 10/11 जमींदारों को व 1/11 भाग स्वयं रखा गया

– सरकार की आमदनी [illegible] के ऊपर [illegible] जमींदारी की जिम्मेदारी पर दी जाती थी

लाभ – जमींदारों को लाभ क्षेत्र में कृषि का [illegible] विकास [illegible] ने पर्याप्त

– सरकार को जमींदार [illegible] सेवाओं को निश्चित [illegible] मिलेगी।

– सरकार की आय में वृद्धि

उम्मीद कि जमींदारों को कृषि व्यवस्था से कृषि [illegible] रूप में करी होगी।

हानि – किसानों को जमींदारों के अत्याचारों से शोषण का सामना

– कृषि उत्पादकता के विपरीत प्रभाव पड़ा।

रैयतवाड़ी व्यवस्था => 1820 में थॉमस मुनरो द्वारा अपनाई गई

=> मद्रास, बम्बई व असम क्षेत्र में लागू किया गया।

=> प्रत्यक्ष किसानों अर्थात रैयतों से सम्पर्क सीधा

=> रैयतों को भूमि का स्वामी माना।

– भू-राजस्व का निर्धारण भूमि के क्षेत्रफल के आधार पर

Scanned with CamScanner

(Malas Answer Sheet)

हानि => इस व्यवस्था में सरकार द्वारा अधिक लगान वीकपुली

- लगान न जमा करने पर भूमि नीलाम कर दिया जाता था।

महलवाड़ी व्यवस्था => लार्ड हेस्टिंग्स के काल में लागू हुई

=> भूराजस्व का बंदोबस्त पूरे गांव के मुखिया या महलो पाटीदारों के साथ किया गया था

=> मध्यप्रांत, यूपी, पंजाब, 30% भाग इसके अंतर्गत थी।

- लगान का निर्धारण उत्पादन के आधार पर

हानि => बगैर महाल के मुखिया को अत्यधिक शक्तिशाली बना दिया।

- सरकार व किसानों से उत्पन्न संबंध समाप्त

- लगान की ऊंची दरें।

इस तरह भूराजस्व व्यवस्था औपनिवेशवादी नीतियों का एक भाग थी जिसने भारतीय किसानों व अर्थव्यवस्था को बदहाल कर दिया जिसने उन्हें बारंबार अकाल को सहना पड़ा। बंगाल के बारे में ... गांव उजड़ जाता था। स्वतंत्रता के पश्चात भूसुधारों को अपनाया गया व वर्तमान में सरकार द्वारा 2022 तक किसानों की आय दुगना करने का लक्ष्य रखा है।

Q. 1 (A) लैगून झील (Lagoon lake)

समुद्र तट के निकट लवण या खारी जल की झील या जलाशय जो रोधिका पुलिन द्वारा समुद्र से पृथक्कृत हो रखा है लेकिन समुद्र का पानी उसमें आ जाता है।

उदा. => चिल्का झील (ओडिशा)
पुलीकट झील (नेल्लोर)

(B) नाफेड (Nafed)

- स्थापना – 2 अक्टूबर 1958
- उद्देश्य – कृषि, उद्यान कृषि एवं वन उत्पाद का विपणन, संसाधन, भंडारण की व्यवस्था करना, उन्नयन तथा कृषि विकास करना है

(C) मल्चिंग (Mulching)

- मृदा संरक्षण की एक विधि है
- इस विधि के अंतर्गत फसलों को काटते समय उसके डंठल खेतों में छोड़ देते हैं या काटे गये फसलों के अवशेष खेतों में बिखेर देते हैं।
- जिससे मृदा के कण संगठित व वाष्पीकरण कम होता है।

2½ 2 2

पनिका जनजाति

- यह जनजाति म.प्र. के सीधी, शहडोल में पाई जाती है।
- इसकी प्रजाति की पहचान है
- यह जाति कबीर पंथी है इस जाति के लोग स्वयं को कबीरहा कहते हैं।

(E) राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

- आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के तहत राज्य आपदा प्राधिकरण की स्थापना की गई
- 2007 में स्थापित किया।
- अध्यक्ष – मुख्यमंत्री
- कार्य – प्राकृतिक व मानव जनित आपदाओं से निपटना।

(F) कूनद्प सागर

KAUTILYA ACADEMY

Scanned with CamScanner

(Mains Answer Sheet)

(G) म.प्र. में कागज आधारित उद्योग

नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल (नेपानगर)
सिक्योरिटी पेपर मिल (होशंगाबाद)
ओरियेंटल पेपर मिल (अमलाई)

(H) शिवालिक श्रेणी

(I) उत्तरी अटलांटिक प्रवाह जल धारा
यह एक गर्म जल धारा है
इसका प्रवाह उत्तरी अटलांटिक महासागर में पूर्व अर्थात उत्तरी व पश्चिमी देशांतर होता है
आगे यह धारा नार्वे सिया धारा में मिल जाती है।

(J) प्रमाणित बीज
ऐसे बीज सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम बीज प्रमाणीकरण मानको को पूरा करते है तथा इन्हे राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था द्वारा प्रमाणित होते है
यह अनुवांशिकी भौतिक रूप से शुद्ध होते है।

सुनामी के कारण

सुनामी के कारणों में मुख्य कारण –
भूकंप के कारण से (समुद्र में)
ज्वालामुखी उद्भेदन
अधिक वर्षा से
भूस्खलन
उल्कापिंड

वर्षाजल संग्रहण
जल संरक्षण की एक तकनीक है।
इसके अंतर्गत वर्षा के जल को तालाबों, गड्ढों व कुओं में एकत्रित किया जाता है
भू-जल में वृद्धि व सूखे के समय उपयोगी होता है

भारत में मातृसत्तात्मक जन जातियाँ
भारत में केवल एक राज्य में मातृसत्तात्मक जनजातियाँ पाई जाती हैं
मेघालय – गारो
खासी
जयंतिया जनजाति मातृसत्तात्मक है।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

(M) नैनगंगा नदी

उद्गम – परस वाड़ा पठार (सिवनी)
अपवाहतंत्र – सिवनी, छिंदवाड़ा के बाद महाराष्ट्र में प्रवेश कर जाती है
समापन – गोदावरी नदी की सहायक नदी है

(N) ह्यूमस

मृदा में सड़े-गले जैव पदार्थ व वनस्पतियों के कार्बनिक ह्यूमस कहलाते हैं
यह मृदा के ऊपरी सतह पर पाया जाता है।
– मृदा के उपजाऊपन में अहम भूमिका अदा करता है।

KAUTILYA ACADEMY

प्रश्न संख्या: २ (ख)

कुशल सिंचाई प्रणाली की विधियाँ बताइए।

कृत्रिम रूप से फसलों को पानी देना सिंचाई कहलाता है जिसके पारंपरिक तरीकों में कुएँ, नलकूप, नहरें व तालाब आते हैं।

कुशल सिंचाई प्रणाली की विधियों के अंतर्गत निम्न विधियाँ आती हैं –

सिंचाई विधियाँ →

- सेलगेज => इसके अंतर्गत खेत में छोटी डोली [illegible] जल [illegible] बनाते हैं।
- ड्रिप सिंचाई => खेत में पाइपलाइन बिछाकर बूंद-बूंद कर पानी पहुँचाया जाता है।
-)
- सतहीजल => नहरों व नालियों द्वारा जल का वितरण।
- स्प्रिंकलर सिंचाई => पाइपलाइन द्वारा फव्वारों द्वारा सिंचाई
- कार्येशन => पुलियों के माध्यम से पानी पहुँचाना

इस तरह इन सिंचाई की विधियाँ अपनाकर जल संरक्षण व हर खेत पानी को पहुँचाया जा सकता व किसानों की आय को दुगना किया जा सकेगा।

Q. (1) म.प्र. में स्थित गंगा नदी तंत्र की प्रमुख नदियों का उल्लेख करें?

म.प्र. दक्षिण प्रायद्वीप का सर्वाधिक नदियों वाला प्रदेश है यहाँ 10 बड़ी नदियों का उद्गम होता है इसलिए इसे नदियों का मायका भी कहा जाता है।

म.प्र. में स्थित गंगा नदी तंत्र की नदियों को इस प्रकार देखा सकते है–

गंगा नदीतंत्र

- यमुना नदीतंत्र
- टोंस नदी उपतंत्र
- सोन नदी उपतंत्र

यमुना नदी उपतंत्र => यमुना की सहायक नदियों में चम्बल नदी जो जानापाव पहाड़ी से उद्गमित होती इसकी सहायक नदियाँ सिंध, पार्वती, बेतवा, केन, सिंध, काली सिंध आदि आती है।

टोंस नदी उपतंत्र => यह सतना जिले (तमसा कुण्ड) से उद्गमित होती है सहायक नदियों में बीहड़, बेलन आदि।

सोन नदी तंत्र => यह अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती इसकी सहायक नदी जोहिला, रिहन्द आदि जिसका संगम गंगा में होता है

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

इस तरह गंगा नदी की सहायक नदियों प्रदेश की तीन सहायक नदियों तो उत्तरी म.प्र. में स्थिति व वहाँ की जैव विविधता को प्रभावित करती है।

1/2

मिश्रित खेती क्या है एवं इसके लाभों का उल्लेख करें ?

जब फसलों के उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है तो उसे मिश्रित कृषि या मिश्रित खेती कहते हैं।

मिश्रित कृषि के लाभ =

→ आय में वृद्धि => कृषि के साथ पशुपालन करने से किसानों को आय अधिक प्राप्त होती

→ खाद की आपूर्ति => पशुओं के अपशिष्ट से खेतों के लिए खाद की आपूर्ति होती रहती जिससे लागत कम होती

→ आजीविका => कृषक के परिवार को साल भर कार्य की प्राप्ति होती है

→ पौष्टिक आहार => कृषक परिवारों को दूध, दही, दही आदि की प्राप्ति से संतुलित आहार प्राप्त होता है।

→ कृषि अपशिष्ट का सही उपयोग => पशुओं को खाद्य सामग्री मिलती रहती है

→

→ भूमि, श्रम, पूंजी का सही उपयोग।

इस तरह मिश्रित कृषि करने से छोटे व सीमांत किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होता है जिससे उनका जीवन स्तर ऊँचा होता है।

(a) 2 (k)

स्थायी पवनें क्या है इनके प्रकारों का वर्णन करें।

स्थायी पवनें वह पवनें कहलाती हैं जो साल भर निश्चित दिशा में प्रवाहित होती हैं। यह उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर प्रवाहित होती हैं।

स्थायी पवनों को तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है-

- व्यापारिक पवनें
- पछुआ पवनें
- ध्रुवीय पवनें

व्यापारिक पवनें => उपोष्ण कटिबंधीय उच्च वायुदाब से विषुवत रेखीय निम्न वायुदाब की ओर चलने वाली पवनें। जिनकी दिशा उपू-दप।

पछुआ पवनें => उपोष्ण कटिबंधीय उच्च वायुदाब से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब की ओर चलने वाली पवनें जिनकी दिशा दप-उपू होती है।

ध्रुवीय पवनें => ये ध्रुवीय उच्चवायुदाब से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब की ओर चलती है उपू-दप।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि निर्दिष्ट पवनें अपनी दिशा में प्रवाहित होती व महाद्वीपों की जलवायु को प्रभावित करती हैं।

म.प्र. में खाद्य प्रसंस्करण की संभावनाओं पर विचार कीजिये

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का तात्पर्य ऐसी गतिविधियों से है जिसमें प्राथमिक कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण कर मूल्य वर्धन किया जाता है उदाहरण - तिलहन, फल, सब्जियों का प्रसंस्करण जिससे अचार, चटनी आदि बनायी जाती है।

म.प्र. में खाद्य प्रसंस्करण की संभावनाओं को निम्न प्रकार देख सकते हैं -

म.प्र. में कृषि जलवायु क्षेत्रों का पाया जाना।

फसलों में विविधता के साथ उत्पादों में अत्यधिक उत्पादन का होना।

म.प्र. का दुग्ध उत्पादन में तीसरा स्थान।

बागवानी फसलों का उत्पादन अधिक जैसे म.प्र. प्याज, लहसुन में द्वितीय स्थान है।

सस्ते श्रम की उपलब्धता।

परिवहन की उचित व्यवस्था।

जनसंख्या अधिक होने के कारण मांग का होना। आदि।

उपर्युक्त तथ्यों से म.प्र. में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की अपार संभावना है आवश्यकता केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति, कुशल मानव संसाधन व आधारभूत संरचना ताकि इस उद्योग को विकसित किया जा सके।

५

उज्जैन [illegible] पर आधिकारिक [illegible] है

उज्जैन के एक प्रसिद्ध मंदिर को [illegible] शामिल [illegible] की [illegible] जिसमें कई लोगों की मृत्यु हुई।

उज्जैन की घटना पर एक [illegible] उठाते है —

उज्जैन की घटना

घटना	कारण	उपाय / सुझाव

घटना → उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में भीड़ में भगदड़ मचने से जिसमें लगभग 40 लोगों की जान गई।

कारण → मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश का रास्ता छोटा होना।

→ कोई [illegible] के लिए [illegible] लोगों का व्यस्त होना

→ भीड़ को नियंत्रित रखने के उपायों का अभाव

→ वातानुकूलन की व्यवस्था का पर्याप्त न होना

उपाय/सुझाव → मंदिर में ऐसी घटनाओं के घटित न हो इसके लिए प्रशासन को कार्य करना चाहिए।

भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था।

- कमियों का मूल्यांकन और निवारण
- सामुदायिक की व्यवस्था
- पार्श्व ग्रह के बारे में बच्चों को जानकारी कराया जाना चाहिए।

इस तरह हम आने वाली आपदाओं को नियंत्रित कर लोगों की जिन्दगी को बचा सकते हैं।

KAUTILYA ACADEMY

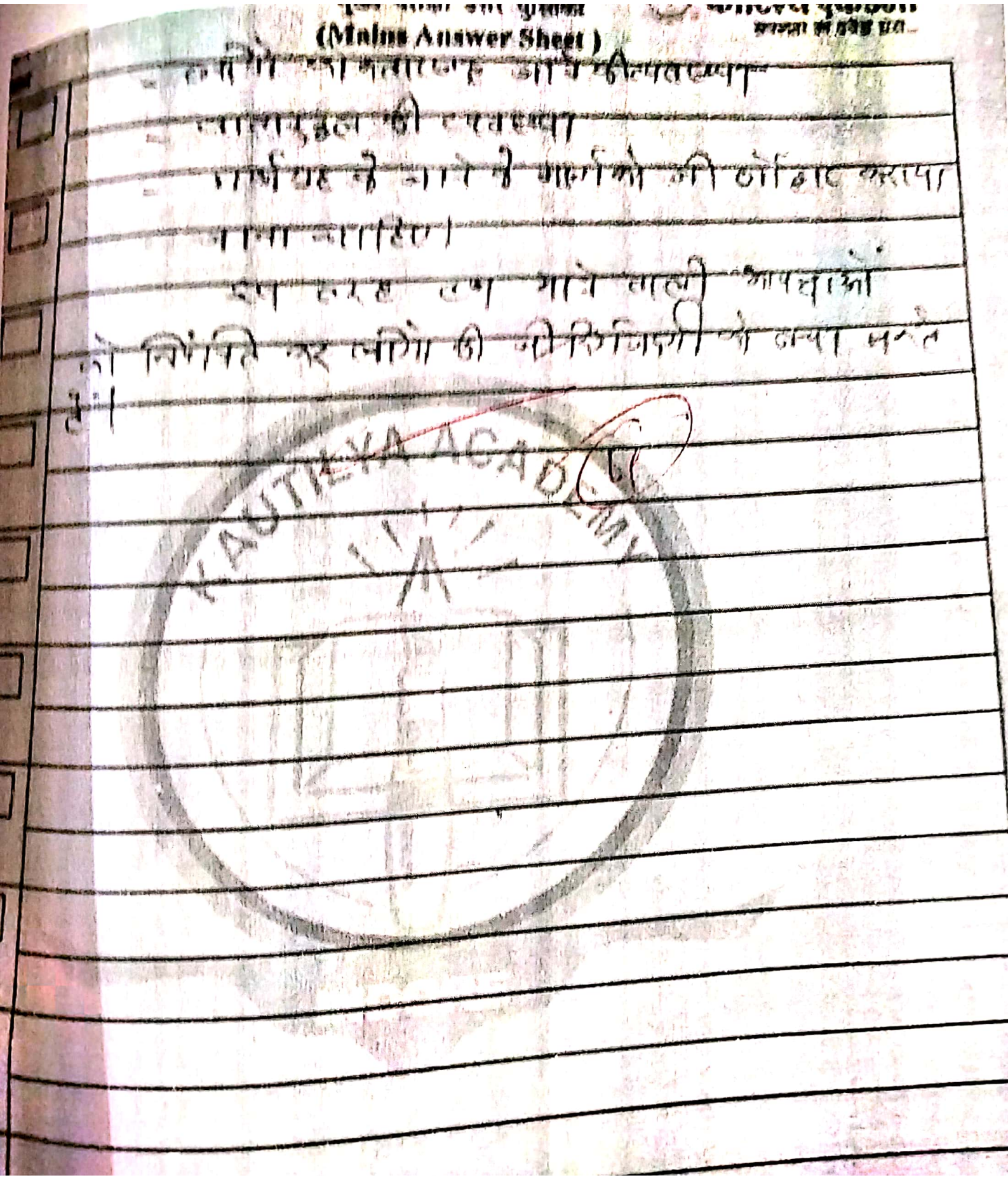

प्र. 14) मृदा क्या है। मृदा संरक्षण के उपाय बताइये।

मृदा भूतल पर पतली परत के रूप में पाई जाती है जिसका निर्माण चट्टानों के अपक्षय से होता है। इसमें खनिज तत्व, पेड़-पौधों एवं जीव-जंतुओं के सड़े-गले अंश, जल तथा गैस का मिश्रण होता है।

मृदा एक प्राकृतिक संसाधन है उसके संरक्षण के लिए निम्न उपाय किये जा सकते हैं।

मृदा संरक्षण के उपाय

- वृक्षारोपण - मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए
- वनोन्मूलन पर रोक
- पशुचारण पर नियंत्रण से मृदा के कणों को ढीला होने से रोका जा सकता है।
- बांध बनाना → नदियों पर बांध बनाने से पानी के प्रवाह को रोका जा सकता है
- फसलों को अदल-बदल कर उगाना
- खेतों पर मेड़ बनाकर
- पहाड़ी खेती → ढलानयुक्त भूमि पर

आदि उपायों के माध्यम से मृदा के कटाव को रोका जा सकता है।

सतह के नीचे ठंडा होकर ठोस रूप धारण कर लेता तो आंतरिक आग्नेय चट्टान का निर्माण होता है उदा० ग्रेनाइट

(b) बाह्य आग्नेय चट्टान => जमीन मैग्मा भूपर्पटी के ऊपर आ जाता है व ठंडा होकर चट्टान का निर्माण करता है उदा. बेसाल्ट चट्टान।

- यह चट्टाने रवेदार होती है व जीवाश्म नहीं पाये जाते हैं।

(2) अवसादी चट्टान => स्थलीय तल पर आग्नेय व रूपांतरित चट्टानों के अपक्षय, अपरदन व निक्षेपण से अवसादी चट्टानों का निर्माण होता है।
- यह चट्टाने परतदार होती।
- जैविक अवशेषों से युक्त चट्टाने होती है।
उदा. - कोयला, बलुआपत्थर आदि।

(3) रूपांतरित चट्टान => ताप एवं दबाव के कारण आग्नेय व अवसादी चट्टानों के संगठन व स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है उसे रूपांतरित चट्टान कहा जाता है।
- जीवाश्म नहीं मिलते।

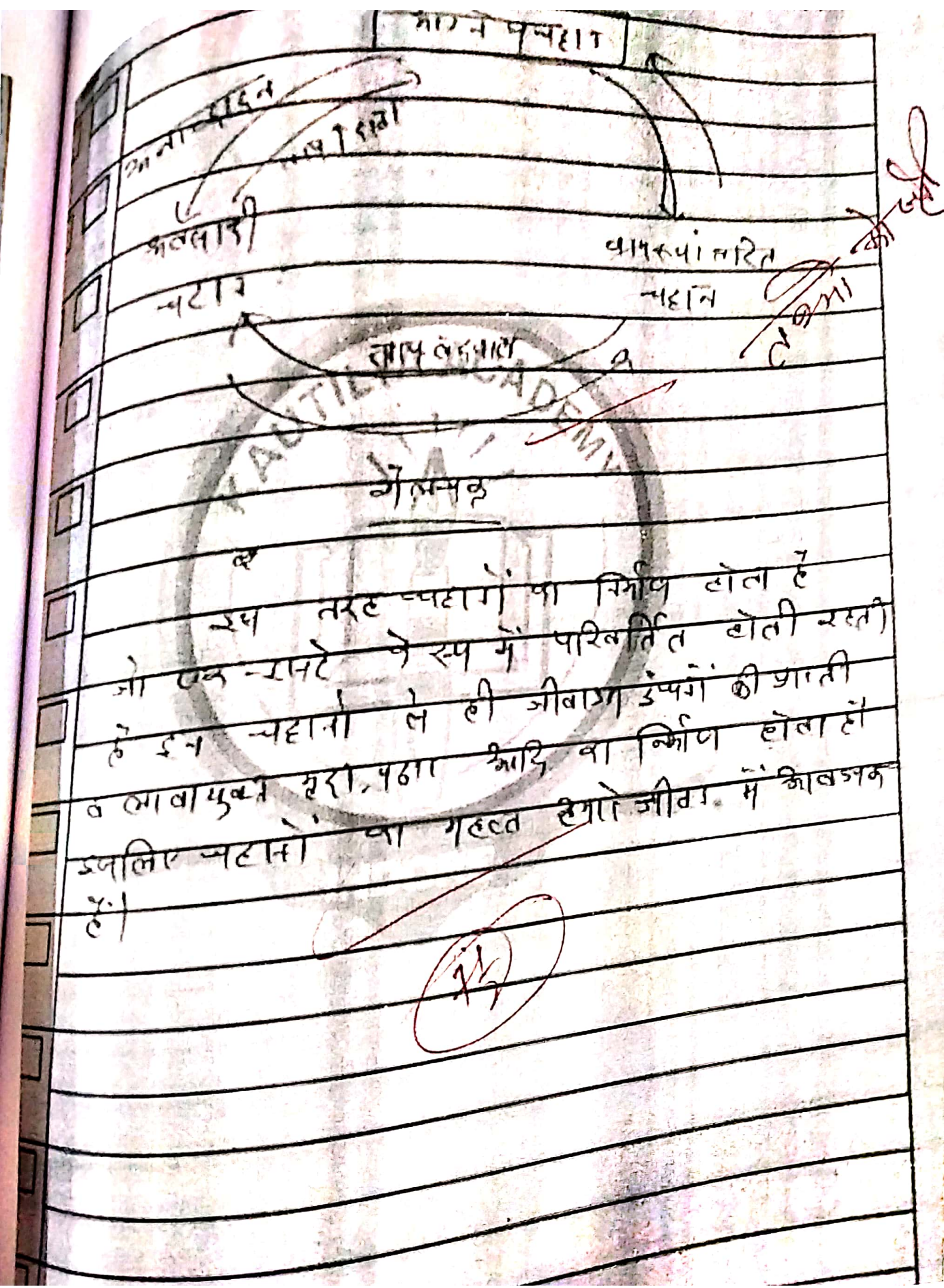

मैग्मा

इस तरह चट्टानों का निर्माण होता है जो एक चट्टान के रूप में परिवर्तित होती रहती है इन चट्टानों से ही जीवाश्म ईंधनों की प्राप्ति व लावायुक्त हीरा, पन्ना आदि का निर्माण होता है इसलिए चट्टानों का महत्व हमारे जीवन में आवश्यक है।

Q.3 (D) जल संरक्षण आज के युग की आवश्यकता है समझाइये साथ ही जल संरक्षण हेतु सुझाव दीजिये।

जल एक प्राकृतिक संसाधन है जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक यह धरती पर तालो, झीले, नदियों, सागरों आदि के रूप में उपलब्ध है किन्तु मानव उपयोग हेतु 3% जल ही उपलब्ध है और जल के अतिदोहन से धरती पर जल की विकराल समस्या उत्पन्न हो गयी है व जल संरक्षण पर जोर देने की बात की जा रही है।

जल संरक्षण आज के युग की आवश्यकता है उसे निम्न तथ्यों से देख सकते है -

नदियों में पानी की मात्रा घटना, गर्मियों में नदियों का सूख जाना

भूजल स्तर के अतिदोहन से भूजल में निरंतर होती कमी।

गर्मी के दिनो में बड़े नगरों में पेयजल की समस्या व वैश्विकतम लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध न होना

प्राकृतिक आपदाओं (जैसे सूखा, वर्षा में कमी, तापमान में वृद्धि आदि) का निरंतरता में होना

बढ़ती जनसंख्या आदि।

इसी कारण जल संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया जा रहा है ताकि आगे

पीढी को लिए प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण किया जा सके।

जल परंरक्षण हेतु निम्न सुझाव है...

जल संरक्षण के उपाय

- रेनवाटर हार्वेस्टिंग
- रिसाइक्लिंग
- कुशल सिंचाई प्रणाली
- खेती के नवीन तरीके
- वाटरशेड प्रबंधन

रेनवाटर हार्वेस्टिंग => इसके अंतर्गत वर्षा के जल को भूमि के अंदर पहुंचाया जाता है।

रिसाइक्लिंग => उपयोग किये जल के शुद्ध कर पुनः उपयोग करना।

कुशल सिंचाई प्रणाली => ड्रिप, स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी विधियाँ अपनाना ताकि कम पानी के उपयोग से अधिक उत्पादन किया जा सके।

खेती के नवीन तरीके => कम पानी उपयोग वाली फसलों का उत्पादन

- कृषक कृषि को बढ़ावा देना।

नागरिक → जल रहित शौचालय।

बाथरूम → दक्षतायुक्त बाथरूम्स का प्रयोग करना।

कार धुलाई → वाटरपिन तकनीक का प्रयोग

यह फ्रेमवर्क जल की मात्रा एवं गुणवत्ता, इन-स्ट्रीम व मौसमी से संबंधित जल सेवाओं लाने पर केंद्रित है।

→ लोगों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता लाना आदि।

उपर्युक्त का प्रयोग कर जल संरक्षण किया जा सकता है जिससे सभी के लिये जल की आपूर्ति वर्ष भर सुनिश्चित की जा सकती है। सरकार द्वारा जल संरक्षण के संदर्भ में प्रि.कि. उपाय, जल शक्ति मंत्रालय, जल संरक्षण प्राधिकरण बनाया गया है, जागरूकता अभियान आदि के द्वारा जल संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है।

भारत में ऊर्जा संसाधनों की जानकारी दीजिए?

किसी भी राष्ट्र / देशों के ऊर्जा संसाधन की अति आवश्यकता है, भारत भी ऊर्जा संबंधी जरूरतों को स्वयं उत्पादन कर या आयात के माध्यम से पूरा करता है। भारत ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए परंपरागत व गैर-परंपरागत संसाधनों की ऊर्जा उत्पादन करता [illegible] देश के लिए ऊर्जा [illegible] सुनिश्चित करता है।

भारत में ऊर्जा संसाधनों को दो भागों में विभाजित किया गया है-

ऊर्जा संसाधन

- परंपरागत संसाधन
  - तापीय विद्युत गृह
  - नाभिकीय परमाणु संयंत्र
- गैर परंपरागत
  - हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर [illegible]
  - [illegible]
  - सौर ऊर्जा
  - पवन ऊर्जा
  - अन्य

Scanned with CamScanner

(Mains Answer Sheet)

तापीय विद्युत गृह ⇒ इसमें कोयला प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम का प्रयोग किया जाता

प्रमुख तापविद्युत गृह - विंध्याचल ताप विद्युत केंद्र (4760 MW)

- सतपुड़ा —

- तालचर तापविद्युत केंद्र (उड़ीसा) आदि

यह देश का 65% ऊर्जा का उत्पादन करते है

नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र ⇒ तारापुर (महा)

रावतभाटा (राजस्थान)

नरोरा (UP)

आदि संयंत्र 3% ऊर्जा की आपूर्ति को सुनिश्चित करते है

गैर परंपरागत ⇒

हाइड्रोइलेक्ट्रिक ⇒ यह नवीनीकृत ऊर्जा, पर्यावरण मित्र स्त्रोत है

⇒ पानी को ऊपर से गिराकर टरबाइन चलाई जाती है

उदा. ⇒ किशनगंगा (कश्मीर)

⇒ कोयना (महाराष्ट्र)

यह 13% ऊर्जा का उत्पादन करता है

बायोगैस ⇒ ग्रामीण अपशिष्ट से विद्युत का उत्पादन किया जाता है

Scanned with CamScanner

- दिल्ली के निकट कुछ
- कुडलई
- मोहं स्टेशन में गोपीधारा आदि
लगभग 2 % बिजली या उत्पादन करने में उपयोगी।

सौर ऊर्जा :) कर्क रेखा व मकर रेखा के मध्य स्थित क्षेत्रों में सौर ऊर्जा की अपार संभावना है। राजस्थान में सौर ऊर्जा पार्क जैसे रीवा सोलर पावर प्लांट (मध्यप्रदेश) आदि।

अन्य नवीकरणीय ऊर्जा :- भूतापीय (मणिकरण) व ज्वारीय ऊर्जा (खंभात) आदि।

इस तरह भारत में परंपरागत व गैर-परंपरागत संसाधनों से ऊर्जा की प्राप्ति होती है परन्तु वर्तमान व भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करना है तो हमें नवीकरणीय शक्ति संसाधनों की दिशा में आगे बढ़ना होगा ताकि परंपरागत संसाधनों पर दबाव कम पड़ेगा व पर्यावरण प्रदूषण रहित ऊर्जा की प्राप्ति होगी।

9

Q.5 (ii) चट्टान क्या है? इनके प्रकारों का विस्तार से वर्णन कीजिये।

पृथ्वी की क्रस्ट में मिलने वाली सभी मुलायम व कठोर पदार्थ को चट्टान कहते है इनका निर्माण अनेक प्रकार के खनिजों के सम्मिश्रण से होता है जिसमें से आठ प्रमुख तत्व ऑक्सीजन सिलिकॉन, एल्युमीनियम, लोहा आदि मुख्य चट्टानों के निर्माण में सहायक होते हैं।

निर्माण विधि के अनुसार चट्टानों के तीन प्रकार होते है

प्रकार

- आग्नेय चट्टान
- अवसादी चट्टान
- रूपान्तरित चट्टान

आग्नेय चट्टान :- इसका निर्माण क्रस्ट के नीचे उपस्थित तप्त एवं तरल मैग्मा से होता है। के ठंडा होने से होता है। इन चट्टानों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(1) अध्यांतरित आग्नेय चट्टान :- जब मैग्मा